विमर्शों के हाशिये पर वेश्या-विमर्श

डॉ. पंढरीनाथ शिवदास पाटिल, गंगामाई महाविद्यालय, नगाँव, धुले, महाराष्ट्र.

आज का दौर विमर्शों का दौर है जहाँ हाशिये पर सुबकते, गिरते-पड़ते आज और फिर उठ खड़े होते समुदाय या वर्ग मुख्यधारा में अपनी जगह बना रहे हैं या कम से कम उन पर बातचीत शुरू हो चुकी है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, और भी न जाने कितने विमर्श अपनी पहचान बना चुके हैं या बना रहे हैं। ऐसे में एक समुदाय ऐसा भी है जिसके बारे में सारा समाज या यूँ कहें कि सारा राष्ट्र जानता है, उसके साथ संवाद स्थापित करता है, संबंध स्थापित करता है, परंतु रात के अंधेरे में। दिन के उजाले में उन्हें जानने से, पहचानने से भी कतराता है। यह उपेक्षित वर्ग और कोई नहीं, वेश्या समुदाय है। इस वर्ग को हम अनेक नामों से जानते हैं। नगरवधू, वेश्या, अप्सरा, कोठेवाली, रंडी, पतिता, और भी न जाने क्या-क्या? इन्हें अपनी ज़रखरीदी गुलाम समझ हम अपनी सुविधानुसार नाम दे देते हैं क्योंकि समाज इन्हें सम्मानित दृष्टि से नहीं देखता। इसलिए इनके नाम समाज की गाली होते हैं।

वेश्यावृत्ति पर बात करने से पहले हमें जानना होगा कि जिसे हम वेश्या कहते हैं, वह आखिर वेश्या बनती कैसे है? इसके लिए हमें समाज की संरचना जाननी होगी क्योंकि वेश्या, कोठेवाली आदि विभिन्न नाम समाज ने ही रखे हैं।

हमारा समाज लिंगों में विभाजित है। स्त्रीलिंग, पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और इन तीनों लिंगों के दर्जे भी स्थापित कर दिए गए हैं। भारतीय समाज पुरुषप्रधान समाज है इसलिए उसे प्रथम लिंग का स्थान दिया गया। इस प्रकार स्त्री अपने आप लिंग के दूसरे स्थान पर आ गई परंतु यह घोषित नहीं था कि स्त्री का स्थान दोयम दर्जे का है। "सिमोन द बोउआर के 'सैकेंड सेक्स' ने इसे घोषित कर दिया कि स्त्री का स्थान दोयम दर्जे का है। जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है, स्त्री को लिंग के आधार पर दूसरा स्थान प्राप्त है। ऐसे में समाज ने दोयम दर्जा प्राप्त स्त्री के कई उपस्थान घोषित कर दिए। अच्छी स्त्री, बूरी स्त्री, पतिता स्त्री, पवित्र स्त्री, अपवित्र स्त्री आदि-आदि। बूरी, पतिता, अपवित्र स्त्री वेश्या की श्रेणी में आई। ऐसी बिगडैल, बूरी, पतिता स्त्री को समझने के लिए समाज के मूल्यों से रू-ब-रू होना होगा।

पुरुषप्रधान समाज में प्रत्येक नियम-कानून पुरुष ने अपनी सुविधानुसार बनाए और जहाँ उसने अपने सामंती (शासक) मूल्यों का प्रयोग करना शुरू किया, वहाँ वह स्त्री को केवल एक भोग्या या वस्तु के रूप में देखने लगा। उसे एक ऐसा स्त्री समाज चाहिए था जो उसके भीतर की विकृत काम-कुंठाओं को बाहर निकाल सके। इसके लिए उसने वेश्या समाज को चुना। स्त्रियों का ऐसा अलग समाज बना दिया गया जहाँ स्त्री को केवल संवेदनहीन, आनंद और उपभोग की वस्तु माना जाने लगा। सगीर रहमानी अपनी कहानी 'हरामजादियाँ' में उनको "कूड़ेदान" कहलवाते हैं।

हमारा भारतीय समाज प्राचीन समय से ही पुरुषप्रधान समाज रहा है और पुरुषों द्वारा स्त्रियों का दैहिक शोषण भी उतना ही पुराना है। इंद्र के दरबार में उनका मन बहलाने के लिए अप्सराएँ होती थीं जिनका प्रयोग समय आने पर किसी ऋषि मुनि की तपस्या भंग करने के लिए किया जाता था। आचार्य चतुरसेन शास्त्री 'वैशाली की नगरवधू में एक ऐसी स्त्री का वर्णन करते हैं जिसे समस्त समाज की वधू बना दिया जाता है। चतुरसेन वैशाली के पुरुषप्रधान समाज का एक अनोखा नियम वर्णित करते हैं जहाँ वैशाली की सबसे सुंदर स्त्री को समस्त वैशाली की नगरवधू बनने पर मजबूर कर दिया जाता है। वैशाली में अम्बपाली क्योंकि सबसे सुंदर है इसलिए उसके पिता और स्वयं उसकी इच्छा के विरुद्ध समाज उसे अपने दैहिक आनंद के लिए प्रयोग करना चाहता है। "गणपति ने कहा- आज आपकी पुत्री अम्बपाली अठारह वर्ष की आयु पूरी कर चुकी। वैशाली जनपद ने उसे सर्वश्रेष्ठ सुंदरी निर्णित किया है। इसलिए वज्जी गणतंत्र के कानून अनुसार उसे परिषद् वैशाली की नगरवधू घोषित किया जाता है। आज्ञा है कि वह आज से सार्वजनिक स्त्री की भाँति जीवन व्यतीत करे। इसी से आज उसे सभागार में उपस्थित होकर अष्टकुल के गण-सन्निपात के सम्मुख शपथ ग्रहण करने की आज्ञा दी गई।" इस प्रकार वैधानिक रूप से अम्बपाली को वैशाली की नगरवधू घोषित किया जाता है। समस्त वैशाली इस बात को जानती है कि न तो अम्बपाली और न ही उसके पिता इस नियम को मानना चाहते हैं परंतु वैशाली के कथित मठाधीश देह-भोज के लिए उत्सुक हैं, इसलिए बार-बार मना करने पर भी वैशाली समाज अम्बपाली को नगरवधू बना देता है। देवदासी प्रथा भी इसी तरह पुरुषों का बिछाया जाल है। वे महिलाएँ जो गृहस्थ जीवन में प्रवेश न करके देवताओं को अपना जीवन समर्पित कर देती हैं, वे भी इस पुरुषप्रधान समाज की बलि चढ़ा दी जाती हैं और गणिका की तरह जीवन व्यतीत करती हैं। समाज आरंभ से ही स्त्री को एक ओर तो

पवित्र, त्याग, क्षमा की दिव्य मुर्ति के रूप में देखना चाहता है, वहीं दूसरी ओर वह उसे भोग्या और एक वस्तु के रूप में भोगना भी चाहता है।

वेश्या आखिर वेश्या क्यों कहलाई जाती है और उसका समाज बाकी समाज से अलग-थलग कोढ क्यों समझा जाता है? इसपर विचार किया जाए तो यह समझ आता है कि स्त्री की पवित्रता और अपवित्रता, उसका अच्छा और बुरा होना उसकी योनि निर्धारित करती है। देह से आगे तो हमारा समाज स्त्री को देख ही नहीं पाता। नासिरा शर्मा की कहानी 'दरवाज़-ए-कज़विन' इसी त्रासदी को चित्रित करती है। इस कहानी की पात्र मरियम की कौमार्य की जाँच एक रुमाल के टुकड़े से की जाती है जिसमें समाज के नियमों के अनुसार वह खरी नहीं उतरती और उसे वेश्या बनने पर मजबूर होना पड़ता है। कहानी में मरियम और वाजिद की मंगनी हो जाती है। वाजिद के बार-बार समझाने पर मरियम वाजिद को अपनी देह सौंप देती है। सब कुछ सही चल रहा होता है। मरियम और वाजिद का निकाह भी हो जाता है। त्रासदी यहीं से शुरू होती है। "समाज के नियम के अनुसार यदि सुहागरात में सफेद रुमाल लाल न हो तो स्त्री का कौमार्य भंग माना जाता है और ऐसी स्त्री को कोई अपने घर की बहू नहीं बनाना चाहता जो शादी से पहले ही अपना कौमार्य खो चुकी हो। मरियम ने यद्यपि अपने भावी पति से ही दैहिक संबंध बनाए थे परंतु उसके पति के अस्वीकार के कारण वह एकाएक बहू से कुलटा, अपवित्र, छिनाल और न जाने क्या-क्या हो जाती है। भीतर ही भीतर पूरा समाज जानता है कि मरियम समाज के नियमों के अनुसार भी पवित्र है परंतु सब चुप है। सबसे बड़ी बात खुद वाजिद चुप है। मरियम जब वाजिद से समाज को सब सच बताने के लिए कहती है तो वह कहता है। "जो हुआ सो हुआ, गई इज्जत लौटकर नहीं आती है... फिर भली लड़कियाँ क्या यूँ अपना अछूतापन खत्म कर देती हैं? गलती तो तुम्हारी थी... मुझे रोक सकतीं थीं। समाज का यह कैसा दोगलापन है! अगर सच में यह पाप था तो इसकी सजा दोनों को मिलनी चाहिए थी। कौमार्य तो दोनों का टूटा था परंतु गलती केवल स्त्री की ही देखी जाती है। अचानक कवि गणेश गनी की कविता याद आ जाती है। "स्त्री ने गलती की / प्रताड़ित हुई / पुरुष ने गलती की / स्त्री ही प्रताड़ित हुई। यहाँ भी मरियम ही प्रताड़ित की जाती है। उसके पास वेश्यागृह के अलावा और कोई आसरा नहीं बचता। वह एक शोषण की दुकान से निकलकर दूसरी शोषण की दुकान में देह-व्यापार करती है। यदि देखा जाए तो स्त्री कभी वेश्या होती ही नहीं। समाज को यह हक किसने दिया कि स्त्री को अपवित्र करार देकर उसे टिशू पेपर बना दिया जाए। समाज स्त्री को भी यह हक नहीं देता कि वह केवल योनि के मानदंड के आधार पर स्वयं को वेश्या बना दे।

आधुनिक युग में माता-पिता अपना पेट पालने के लिए आसानी से अपनी बेटी को देह व्यापार में लगा देते हैं। समाज ने कभी न स्त्री की इच्छा जाननी चाही और नही स्त्री को ऐसा मौका दिया कि वह अपनी इच्छा समाज के सामने रख सके। फातिमा बाई ही कोठे पर नहीं रहती कहानी में चित्रा मुद्गल बताती हैं कि स्त्री को वेश्या बनाने का काम कोठेवालियों ही नहीं करतीं, उनके माँ-बाप भी करते हैं। कहानी की पात्र रेशमा की सौतेली मी उसे वृद्ध की सेवा करने के बहाने उससे देह व्यापार करवाती है। रेशमा अपनी व्यथा बताते हुए कहती है- "मैं बहुत गरीब घर की लडकी थी। यहाँ तक कि दो-दो दिन हो जाते रोटी का मुँह देखे। एक रोज अम्मी बोली. चल तुझे काम पर लगाना है। काम कुछ नहीं है फकत बूड़ा-बुढ़िया को पानी-वानी देते रहना है। बुढ़िया तो ठीक थी, मगर जैसे ही वह घर से बाहर जाती, बूढा उसे फ्रॉक उतारने को कहता।" जब रेशमा अपनी माँ से शिकायत करती है तो भी काम छुड़वाने के बजाए उसे डाँटती है कि खबरदार यह काम छोड़ा तो. साथ ही समझाती भी है कि 'आइंदा जब वह फ्रॉक उतारने के लिए कहे तो मचल जाना कि पहले हाथ में कुछ रुपये रख। अजय कुमार शर्मा की कहानी वेश्या एक प्रेरणा' में भी वेश्या स्वीकारती है कि उसे उसके माँ-बाप ने इस काम पर लगाया है। वह कहती है- 'वेश्या बनने वाली हर लड़की की अपनी कहानी है। कुछ को हालात ने वेश्या बनाया, तो कुछ को उसकी किस्मत ने । पर मुझे मेरे खुद माँ-बाप ने।" कई बार सब कुछ चन से खरीदने की चाह रखने वाले भी लड़कियों को इस ओर मोड़ देते हैं। ऐसे लोग नागही है कि दौलत से सब कुछ खरीदा जा सकता है. फिर चाहे वह स्त्री की देह ही क्यों न हो? वेश्या एक प्रेरणा एक ऐसे ही अमीर व्यक्ति की मानसिकता को प्रदर्शित करती है। कहानी की नायिका जिस घर में काम करने जाती है उस घर का मालिक एमे 'महज 25000/- रुपये में खरीद लेता है। मालिक यह बात अच्छी तरह से जानता है कि नायिका अपने पूरे होश-हवास में अपनी देह नहीं सौंपेगी तो शोषण का एक अलग तरीका निकाला जाता है। बकौल नायिका- ड्रग्स की एक सुई शाम को और एक सुई रात को। फिर गहरी नींद की सुई दिन को दी जाती जिससे में भाग न सकूँ।"

स्त्री बेचने का कारोबार संवैधानिक रूप से गलत है। भारतीय दंड संहिता की धारा शप के अनुसार वेश्यावृत्ति के लिए तस्करी अपराधों के अंतर्गत सजा के योग्य है। 'जो भी व्यक्ति वेश्यावृत्ति के लिए तस्करी करता हुआ पाया जाता है उसे कम से काम ? वर्ष और अधिक से अधिक 11 वर्ष तक के कारावास का प्रावधान है। साथ ही साथ। लाख रुपये का जुर्माना भी है। इतना सब होने के

बाद भी लड़कियों की तस्करी आज भी जारी है। आज भी मीडिया में आए दिन खबरें आती है कि परिवार वालों ने गरीबी से तंग आकर अपनी लड़की को बेच दिया। कुछ समय पहले समाचार पत्र 'नवभारत टाइम्स' में यह खबर आई थी कि "बिहार के एक जिले में रहने वाले माता-पिता ने अपनी बेटी को महज 500 रुपये में बेच दिया। "13 इस परिवार की तीन संतान थी जिनका पेट भरने के लिए उन्होंने अपनी बेटी बेच दी। प्रश्न यह उठता है कि उन 500 रुपयों से कितने दिन गुजारा चल सकेगा? उसके बाद क्या होगा? इन सब प्रश्नों से अनजान माता-पिता ने अपनी बेटी बेच दी।

समाज का एक वर्ग लड़की पैदा होने पर दुख मनाता है, भ्रूण हत्याएँ करता है, वहीं समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो बेटी पैदा होने का जश्न मनाता है। उनका मानना है कि लड़की पैदा होगी तो देह बेचकर रुपये कमा कर देगी। 'वेश्या एक प्रेरणा' कहानी की नायिका बताती है- "वेश्या के घर में लड़की के जन्म लेने पर खुशी मनाई जाती है और लड़कों के जन्म पर दुख। ये खुशी उस लड़की के लिए बारह-तेरह साल की होती है क्योंकि उसके बाद उसे धंधे पर उतार दिया जाता है। "14

समाज सदा से ही लड़कियों के प्रति असंवेदनशील रहा है, खासकर वेश्याओं के प्रति। ऐसा मान लिया जाता है कि वेश्या में कोई संवेदना नहीं होती। उसका केवल एक ही धर्म होता है धन। समाज समझकर भी नहीं समझना चाहता कि वेश्या भी तो एक लड़की ही होती है आखिर। उसकी भी अपनी आशाएँ, आकांक्षाएँ होती हैं। कुछ सपने उनकी आँखों में भी पलते हैं चाहे पुरुषप्रधान समाज में उनका मोल हो या न हो। प्रत्येक स्त्री की तरह वेश्या भी चाहती है कि उसका भी एक पति हो जो उसे भरपूर प्रेम करे। उसके सुख-दुख में भागीदार हो। कमलेश्वर की कहानी 'मांस का दरिया' की पात्र जुगनू पेशे से एक वेश्या है और वह अच्छी तरह जानती है कि उसे गृहस्थ जीवन कभी प्राप्त नहीं होगा परंतु फिर भी वह एक ऐसे ग्राहक की चाहत रखती है जो उसे बेशक पत्नी न बनाए परंतु उसके प्रति एकनिष्ठ हो। इसीलिए थैले वाला व्यक्ति जो कि उसका ग्राहक है, उससे जुगनू को आशा बँध जाती है कि शायद वह उसके प्रति न सही परंतु शायद उसकी देह के प्रति एकनिष्ठ रहे। एक बार जब जुगनू अपने जांघ में निकले फोड़े से परेशान थी तो वह उस थैले वाले व्यक्ति को बताती है कि आज उसके बदन में हाड़फूटन है। यह सुनकर थैले वाला व्यक्ति वापिस चला जाता है। उसका दर्द सुनकर थैले वाले व्यक्ति का चले जाना उसे अच्छा लगता है। उसे लगता है कि उसकी जगह अगर कोई दूसरा ग्राहक होता तो उसे यूँ न छोड़ता। अगर छोड़ भी देता तो अपनी देह की प्यास बुझाने वह किसी दूसरी वेश्या के पास चला जाता परंतु थैले वाला व्यक्ति किसी दूसरी वेश्या के पास नहीं जाता। "नानाबाई की चिमनी में से धुँआ निकल रहा था... वह उसे देखती रही थी। वह कहीं नहीं रुका। धीरे-धीरे गली पार कर सड़क की तरफ मुड़ गया था। उसी सड़क पर, जिस पर वह इमारत थी, जिसमें वह रहता था। जुगनू को उसका यूँ लौट जाना बहुत अच्छा लगा था। हल्की-सी खुशी भी हई थी। कोठरी के पलंग पर आकर वह लेट रही थी।"" ठीक इसी तरह की भावना 'दरवाज़-ए-कज़विन' कहानी की पात्र मरियम की है। मरियम एक वेश्या है और दिन-रात धन के बदले अपनी देह का व्यापार करती है। इस व्यापार में भी उसे किसी अपने की तलाश है। एक दिन मरियम के पास एक पुरुष आता है। यद्यपि इस व्यापार में कितने पुरुष आए और गए परंतु मरियम ने किसी पुरुष का नाम नहीं पूछा, न ही किसी पुरुष की इस बात में दिलचस्पी रही कि इस देह का क्या नाम है, जिसके साथ वह खिलवाड़ कर रहे हैं। एक दिन अचानक "एक पुरुष मरियम से उसका नाम पूछता है। इस धंधे में किस तरह आई? तुम पढ़ना जानती हो? जैसे सवाल किसी पुरुष ने नहीं पूछे थे।" आने वाले पुरुष और मरियम का केवल एक ही संबंध होता था-देह का। परंतु यह पुरुष जो स्वयं को दोस्त कहता था "शोषण, पूँजी, वर्ग-संघर्ष, तीसरी दुनिया की बात करता था, पढ़ने के लिए किताबें देता था।"" दोस्त की यह बातें मरियम को देह से परे लगतीं थीं जो उसे देह-व्यापार से निकलने पर प्रेरित करती थी। मरियम की भी इच्छा होती थी कि वह उन बातों को रोज सुने और यह दोस्त हर शाम उसके पास आया करे। मरियम हर शाम उसका बेसब्री से इंतजार भी करती थी।

स्त्री या तो मजबूरी में देह-संबंध बनाती है या फिर प्रेम पाने के लिए देह संबंध बनाती है परंतु पुरुष देह पाने के लिए प्रेम करता है। सुभाष अखिल की कहानी 'बाजार बंद' एक ऐसी ही स्त्री की कहानी है जो मजबूरी में देह व्यापार करती है परंतु कहीं न-कहीं उसके मन में भी सभी स्त्रियों की भाँति एक आशा दबी हुई है कि वह समाज में सम्मान की दृष्टि से देखी जाए। सम्मान की दृष्टि से देखने के लिए स्त्री के पास पुरुष का अवलंब होना आवश्यक है फिर चाहे वह पिता का हो, भाई का हो या फिर पति का। जरीना देह व्यापार की दुकान पर बैठी यही सपना देखती है। सुभाष अखिल की यह कहानी यथार्थोन्मुख आदर्शवादी कहानी है इसलिए जरीना को प्रेमी शामे का प्यार, सम्मान, एकनिष्ठता सब मिलती है। शामे और जरीना का प्रेम परवान चढ़ता है और वे विवाह के बंधन में बँध जाते हैं। एक देह व्यापार में लिप्त स्त्री का घर बसाना न तो उसके कोठे की मालकिन को सहन होता है और न ही सभ्य कहा जाने वाला समाज उसे स्वीकार कर पाता है। सबसे बड़ी विडंबना यही है कि पहले तो कोई पुरुष सामने नहीं आता जो देह व्यापार में लिप्त स्त्री

को स्वीकार कर सके परंतु अगर कोई पुरुष इतनी हिम्मत दिखाता भी है तो समाज उसे स्वीकार नहीं करता। वेश्या कही जाने वाली स्त्री के साथ पुरुष का संबंध समाज को कचोटता रहता है। 'बाजार बंद' कहानी के शामे के साथ भी यही होता है। जरीना और शामे की गृहस्थी न तो समाज को स्वीकार होती है, न ही पुलिस व्यवस्था उसे जीने लायक छोड़ती है और कोठे की मालकिन को भी मलाल बना रहता है कि रुपए कमाने का एक जरिया हाथ से निकल गया। फलतः जरीना को देह व्यापार करने के जुर्म में जेल हो जाती है और शामे को भी लडाई-झगडा करने के अपराध में जेल में डाल दिया जाता है। शोषण यहीं समाप्त नहीं होता। सभी पुलिसकर्मी जरीना के साथ अवैध संबंध बनाते हैं। एक सपने के बिखरने की किरचें हैं जो जरीना और शामे को ही नहीं चुभती बल्कि पाठक की आँखों में भी चुभती हैं। कोई भी पुरुष शामे जैसी हिम्मत नहीं जुटा पाता। सआदत हसन मंटो की कहानी 'हतक' की नायिका भी इस सच को बखूबी जानती है परंतु फिर भी फरेबी माधो से प्रेम करती है। माधो से ही नहीं बल्कि हर मीठा बोलने वाले ग्राहक के साथ भावनाओं में बह जाती है। वह सबकुछ जानकर भी अनजान बनी रहती है। वह तन, मन, धन से माधो को समर्पित है। हर ग्राहक कहता है- "सौगंधी मैं तुझसे प्रेम करता हूँ...। सौगंधी यह जानते हुए भी कि वह झूठ बोल रहा है, बस मोम हो जाती थी और ऐसा महसूस करती थी जैसे सचमुच उससे प्रेम किया जा रहा हो, प्रेम... कितना सुंदर बोल है, वह चाहती थी कि इस प्रेम को पिघलाकर अपने अंग-अंग पर मल ले... "18 देह-व्यापार करने वाली प्रत्येक स्त्री इस स्वप्न को जीती है। इस स्वप्न को सच करने के लिए हमें समाज की मानसिकता बदलनी होगी। उन्हें एक कोढ़ और छूत का रोग मानने के बजाए एक स्त्री के रूप में, एक इंसान के रूप में देखना होगा।

समाज और संविधान दोनों देह व्यापार को निकृष्ट मानते हैं। इस व्यापार में संलग्न स्त्री और पुरुषों को भी हेय दृष्टि से देखा जाता है। देह-व्यापार करने वालों का यह मानना है कि यह भी अन्य कामों की तरह एक काम है। भीख माँगने से अच्छा है मेहनत करके कमाया जाए। स्त्री अगर देह-व्यापार को छोड़कर दूसरा काम करना भी चाहे तो भी वह अधिकतर केवल भोग्या ही समझी जाती है। आए दिन कार्यक्षेत्र में महिलाओं के दैहिक शोषण की बात सामने आती है। इस तरह के शोषण से तंग आकर भी स्त्रियाँ देह-व्यापार में उतर आती हैं। तेजेंद्र शर्मा की कहानी 'सुनो तुम सच कह रही हो' की पात्रा कविता मसाज पार्लर में काम करती है जिसका दूसरा अर्थ है देह-व्यापार। कविता इसे अन्य कामों की तरह एक काम मानते हुए कहती है- "सुनो, मैं कोई अबला बेचारी नारी नहीं हूँ। मेरे लिए यह काम ठीक वैसा ही है जैसे कोई बैंक मैनेजर या वकील घर से तैयार होकर निकलता है। अपने ग्राहक निपटाता है और शाम को घर आ जाता है। "19 ठीक इसी तरह अजय कुमार शर्मा की कहानी 'वेश्या एक प्रेरणा' में मसाज पार्लर में खुलेआम देह-व्यापार चलता है। यहाँ सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मसाज पार्लर में काम करने वाली किसी भी लड़की को जबरन देह-व्यापार में नहीं धकेला जाता। लड़की अपनी इच्छा से ही देह-व्यापार में उतरती है। इस तरह के मसाज पार्लर विदेशों की देन हैं परंतु आजकल भारत में भी यह धड़ल्ले से चल रहा है। 'वेश्या एक प्रेरणा' कहानी की पात्र कहती है- "सलून में जाने के बाद पता चला कि असल काम क्या है। मसाज के साथ-साथ मसाज करवाने वालों के साथ संबंध भी बनाए जाते हैं और यह बात मुझे तब पता चली जब एक कस्टमर ने मुझसे यह सब करने को कहा। "20 यहाँ समय की झनकार में यह बात स्पष्ट सुनाई देती है कि देह-व्यापार करने वाली स्त्रियाँ भी हाड़-तोड़ मेहनत के बाद धन कमाती हैं। 'हलाल का टुकड़ा' कहानी की फुलिया सीधे-सीधे घोषणा करती है- "तो क्या हम किसी की चोरी करती हैं, हम क्या माँगकर खाती हैं। 21 समाज जिन स्त्रियों को घृणा से देखता है या समाज के लिए कोढ़ मानता है, वे भी ईमानदारी निभाती हैं और समाज भी यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि वास्तव में इन "स्त्रियों का भी धर्म है, ईमान है, इज्जत है। उन्हें फुलिया वेश्या में ज्योति दिखाई देने लगी जैसे कोई परम त्यागी, संतपंती देवी उनके सामने बैठी हो। "22

समाज को अपने भीतर के इस घृणा द्वेष से लड़ना होगा। हमें जानना होगा वेश्या के पीछे वेश्या बन जाने का दर्द। आने वाले समाज की बेहतर तस्वीर में वेश्याओं को भी समाज में सम्मानित रूप में देखा जाए, तभी बदलाव की शुरुआत होगी। अभी तो लोग बात करने से भी डरते हैं। वेश्या शब्द सुनकर ही बगलें झाँकने लगते हैं जैसे इस शब्द का उच्चारण ही कोई गुनाह हो।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रभा खेतान- स्त्री उपेक्षिता
2. वाङ्मय पत्रिका, पृ. 161
3. चतुरसेन शास्त्री- वैशाली की नगरवधू, पृ. 14
4. वाङ्मय पत्रिका, पृ. 79
5. वही, पृ. 80

6. गणेश गनी की कविताएँ (फेसबुक से साभार)
7. वाङ्मय पत्रिका, पृ. 69
8. वही, पृ. 69
9. वही, पृ. 116
10. वही, पृ. 120
11. वही, पृ. 120
12. www.prsindia.org billtrack
13. नवभारत टाइम्स, 2019 मार्च
14. वाङ्मय पत्रिका, पृ. 118
15. वही, पृ. 44
16. वही, पृ. 77
17. वही, पृ. 81
18. मंटो की कहानियाँ पृ. 72
19. तेजेंद्र शर्मा - मौत एक मध्यांतर, पृ. 52
20. वाङ्मय पत्रिका, पृ. 121
21. वही, पृ. 28
22. वही, पृ. 34